*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. 18, Issue No. 3, April-2021, ISSN 2230-7540*

# पाओलो फ्रेरे के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन तथा भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में इसकी प्रासांगिकता

**Dr. S. K. Mahto***

Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

***सारांश -*** ***शिक्षा सिर्फ सूचनात्मक ज्ञान, सैद्धांतिक ज्ञान, पुस्तकीय ज्ञान सीखने -सीखाने की अवधारणा न होकर आजीवन चलने वाली सोद्दश्य प्रक्रिया होकर आजीवन चलने वाली सशक्त माध्यम है। यह व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कार मानव जीवन की गुणात्मकता को निर्धारित करती है, क्योंकि मनुष्य का सर्वांगीण विकास जितना शिक्षा से जुड़ा है, शायद अन्य किसी पक्ष से नहीं। यही कारण है कि विश्व के सभी चिंतक एवं दार्शनिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से शिक्षा संदर्भ से जुड़े रहे है। पाओलो फ्रेरे भी पाश्चात्य संदर्भ के शैक्षिक विमर्श से जुड़े ऐसे ही शैक्षिक चिंतक हैं जिनके चिंतन की संदर्भिक उपादेयता भारतीय शैक्षिक में विवेचित वं विश्लेषित की जा सकती है।निर्विद्यालयीकरण की भाँति फ्रेरे मानते हैं कि शिक्षण संस्था से बाहर भी शैक्षिक प्रक्रिया संभव है। वह शिक्षा प्रणाली के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक चेतना विकसित कर सामाजिक न्याय केंद्रित शोषणयुक्त पूर्ण मानुषीकरण जैसा परिवर्तन क्रांति के द्वारा लाने पर बल देते है। पाओलो फ्रेरे सर्वाधिक समस्या उठाउ शिक्षा, पाठ्यक्रम लचीलापन, स्वतः स्फूर्ति द्वारा सीखना, शिक्षक को अभिभावकत्व बोध बनाने, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिकता से समृद्ध करने, बालक को वस्तु की जगह मानव इकाई मानने, सीखने को कृत्रिमता के श्रम से यथार्थ के धरातल पर लाने, अनौपचारिक शैक्षिक गतिविधियों को शैक्षिक रूप से अधिक प्रभावी बनाने, शिक्षा के माध्यम से सामाजिक रूपान्तरण करने आदि के प्रयासों में लगते हैं।***

***कुंजी शब्द -*** ***पाओलो फ्रेरे, शैक्षिक चिंतन, शैक्षिक परिदृश्य तथाप्रासांगिकता***

---------------------------------X---------------------------------

## भूमिका

शिक्षा सिर्फ सूचनात्मक ज्ञान, सैद्धांतिक ज्ञान, पुस्तकीय ज्ञान सीखने -सीखाने की अवधारणा न होकर आजीवन चलने वाली सोद्दश्य प्रक्रिया होकर आजीवन चलने वाली सशक्त माध्यम है। यह व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कार मानव जीवन की गुणात्मकता को निर्धारित करती है, क्योंकि मनुष्य का सर्वांगीण विकास जितना शिक्षा से जुड़ा है, शायद अन्य किसी पक्ष से नहीं। यही कारण है कि विश्व के सभी चिंतक एवं दार्शनिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से शिक्षा संदर्भ से जुड़े रहे है। पाओलो फ्रेरे भी पाश्चात्य संदर्भ के शैक्षिक विमर्श से जुड़े ऐसे ही शैक्षिक चिंतक हैं जिनके चिंतन की संदर्भिक उपादेयता भारतीय शैक्षिक में विवेचित वं विश्लेषित की जा सकती है।

## भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्णनात्मक प्रवृत्ति

वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में शिक्षा व्यक्ति को विशिष्ट दिशा देने में असमर्थ -सी हो रही है। क्योंकि वह सिर्फ सूचनात्मक पुस्तकीय एवं सैद्धांति ज्ञान तक ही सीमित होती जा रही है। परिणामतः दिशाहीन एवं निरर्थक है। यह शिक्षक -शिक्षार्थी के अर्थपूर्ण संवाद से संबंधित न होकर सिर्फ वर्णन करती है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी में ज्ञान की जिज्ञासा एवं अध्ययन -अध्यापन की प्रवृति समाप्त सी हो गयी। शिक्षक सिर्फ वेतनभोगी व्यक्ति रह गया है और शिक्षार्थी सिर्फ प्रमाणीकरण से जुड़ने वाला व्यक्ति। शिक्षक सूचनात्मक ज्ञान को शिक्षार्थी के सम्मुख आधे-अधूरे मन से प्रस्तुत करता है अर्थात् शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक सक्रिय भूमिका में होता है वहीं शिक्षार्थी शिक्षक केन्द्रित शिक्षा (शिक्षार्थी निष्क्रिय) व्याख्यान को सुनता है। वर्णन छात्रों को वर्णित वस्तु को यांत्रिक ढंग से रट लेने के तरफ ले जाता है। ”इससे भी स्थिति नाजुक तब होती हैं जब शिक्षक, शिक्षार्थी को पात्र या बर्तन बना देता है। जिन्हें शिक्षक द्वारा भरा जाना होता है। “इस प्रकार शिक्षा की वर्णनात्मक प्रणाली में शिक्षक सक्रिय (वर्णनकर्ता) होता है। शिक्षार्थी (श्रोता) होता है। वर्णन की प्रक्रिया है में शिक्षक का ज्ञान के उपर एकाधिकार होता है।

www.ignited.in

भारतीय शिक्षा प्रणाली भी आज शिक्षा वर्णन के रोग से पीडित है। जबकि शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य सिर्फ-अर्थपूर्ण संवाद न होकर (द्विमुखी प्रक्रिया), त्रिमुखी (शिक्षक-शिक्षार्थी-पाठ्यक्रम) प्रक्रिया है। यह सिर्फ सूचनात्मक ज्ञान से संबंधित न होकर विवेक से समन्वित है। इस प्रकार शिक्षा को जितने अवयव प्रभावित और निर्धारित करते हैं, इस दृष्टिकोण से वर्तमान संदर्भ में शिक्षा आजीवन चलने वाल बहुमुखी प्रक्रिया है एवं विवेकाउन्मुख मानवीकरण की संवाद की प्रक्रिया है।

## शिक्षा प्रणाली एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का संबंध विच्छेद

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली से सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों सत्य, धर्म, प्रेम, शांति, अहिंसा का विच्छेद -सा हो गया है, जिससे शिक्षा प्रणाली में प्रदर्शन प्रभाव (डिमांस्ट्रेशन इफेक्ट) परिलक्षित हो रहा है एवं सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अवमूल्यन हुआ है क्योंकि शिक्षा और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों में अनन्य संबंध है। मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन के कारण प्रचलित शिक्षा प्रणाली दिशाहीन, निरर्थक एवं अप्रासंगिक सिद्ध हो रही है, जिससे राष्ट्रीय चेतना, चरित्र, सोच एवं प्रतिभा में ह्रास हुआ है। पूर्णतः मूल्य विमुख शिक्षा से संस्कार, चरित्र एवं सार्वांगीण विकास की पूर्णतः उपेक्षा होती है। सिर्फ संसद द्वारा अनुमोदित शिक्षा को ही राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली नही कहा जा सकता। सह अर्थों में राष्ट्रीय शिक्षा वह है जो राष्ट्र की प्रतिभा, परम्परा एवं चरित्र से जुडी हुई हो।

शिक्षा से मानवीय मूल्यों के विलोप के कारण सम्पूर्ण मानव जीवन की गुणवता प्रभावित हो रही है क्योंकि मानव जीवन की गुणवता का मानवीय मूल्यों से अनन्य संबंध है। मूल्य विमुख शिक्षा प्रणाली का दुष्प्रभाव यह हो रहा है कि यह एक ओ भौतिकतावादी प्रवृतियों एवं उपभोक्तावादी समाज को प्रोत्साहित कर रही है दूसरी ओर एकागी होकर आध्यात्मिकता से उदासीन होती चली जा रही है। मानव जीवन की गुणवता व संतुलन के लिए शिक्षा एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों में समन्वय होना चाहिए। आधुनिक प्रचलित शिक्षा व्यक्ति में सिर्फ बौद्धिकता का विकास कर रही है, परिणामतः ज्ञान का विस्तार हो रहा है लेकिन विवेक क्षीण हो रहा है जिससे जीवन मूल्यों में ह्रास हो रहा है। आज विश्व समाज पीडित हैं। क्योंकि ज्ञान का विस्तार तेजी से हो रहा है। ज्ञान के विस्तार के अनुपात में जीवन मूल्य नहीं विकसित हो पाए हैं।

पाओलो फ्रेरे के चिंतन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिन्होंने जिस मूल्योन्मुख शिक्षा प्रणाली को प्रस्तुत किया है, वह सामाजिक न्याय, शोषणविहीनता एवं मानवतावादी आदि श्रेष्ठ मूल्यों पर आधारित है जो शोषणविहीन समाज की स्थापना के लिए श्रेष्ठतर है। पाओलो फ्रेरे के चिंतन के सम्य्क विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन्होंने शिक्षा एवं व्यक्ति के जीवन की गुणात्मकता को एक दूसरे का पर्याय माना है। तात्पर्य यह है कि फ्रेरे ने व्यक्ति की सर्वाेच्च नैतिकता का विकास के उपकरण के रूप में सार्वभौमिक मानवीय मूल्य को स्वीकार किया है। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि स्वावलम्बी, सच्चरित्र, विनयशील, करूणायुक्त, दयावान, अहिसंक, शोषणविहीन युक्त मानव का निर्माण शिक्षा ही कर सकती है।

## शिक्षा के राजनीतिकरण का संकट

वर्तमान भारतीय संदर्भ मे राजनीति मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही है, जिससे राष्ट्र विशेष की शिक्षा भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। आज जब व्यक्ति जीवन में उदासीन, भ्रांति एवं क्लांति से पीडित हैं, समाज सामाजिक विषमता से प्रभावित है, राजनीति मनुष्य के सार्वजनिक जीवन को उभारने व संवारने के बजाए उसे नकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर रहीं है। लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक मूल्य सिर्फ सैद्वांतिक अवधारणा होकर रह गए हैं। राजनीति के अपराधीकरण एवं अपराधियों के राजनीतिकरण के कारण लोकतंत्र नैतिकता क्षीण होती जा रही है। इन संदर्भो में राजनीति से सकारात्मक दृष्टिकोण की उम्मीद करना निरर्थक है। राजनीति, राजनीतिक विचारधारा एवं राजनेता सभी विषयों में हस्तक्षेप एवं अतिक्रमण कर रहे हैं एवं छात्रों को संकीर्ण राजनीति की तरफ प्रेरित कर रहे हैं जिससे शिक्षकों-छात्रों में अध्ययन-अध्यापन की प्रवृति समाप्त होती रहीं है।

वर्तमान में शिक्षा का राजनीतिकरण न होकर राजनीति का शिक्षाकरण होना चाहिए, तत्पश्चात् व्यक्ति का शिक्षाकरण होना चाहिए। अतः प्रतिमान परिवर्तन राजनीति एवं व्यक्ति के शिक्षाकरण की तरफ होना चाहिए। छात्रों को समर्पण की भावना से अध्ययन करना चाहिए। जिससे वे शैक्षणिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकें। शिक्षा के राजनीतिकरण के कारण ही शिक्षण संस्थाओं में धरना- प्रदर्शन एवं हडताल होते रहते है। जिससे शैक्षिक पारिस्थितिकी पर, ऋणात्मक प्रभाव पड रहा है। निष्कर्षतः सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली न्याय प्रणाली जैसी स्वतंत्र होनी चाहिए एवं राजनीति का शिक्षाकरण एवं शिक्षा का अराजनीतिकरण ही सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। लेकिन पाओलो फ्रेरे का मानना है कि शिक्षा भी एक राजनीति है। क्योंकि बिना शिक्षा के राजनैतिक क्रांति नहीं हो सकती। उद्देश्य

यह होना चाहिए कि कैसे व्यक्ति का विवेकीकरण एवं मानुशीकरण किया जाए।

### प्रमाणीकृत शिक्षा लक्ष्य और मानवतावादी शिक्षा लक्ष्य द्वन्द्व

मनुष्य मात्र के लिए शिक्षा तो एक ऐसा मंत्र है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण आचरण, व्यवहार एवं जीवन- मूल्याकं को प्रभावित करता है। शिक्षा से केवल शिक्षा ग्रहण करने वाला ही प्रभावित नहीं होगा, बल्कि प्राप्त शिक्ष से निर्मित अपने व्यक्तित्व से व्यक्ति सम्पूर्ण परिवेश, समाज और राष्ट्र को उत्प्रेरित करता है। अतः शिक्षा का मानव सभ्यता के इतिहास के आदि का से ही विकास होता रहा है तथा इसके मूल्यों में युगानुरूप परिवर्तन भी हुआ है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संकीर्ण शैक्षिक लक्ष्यों को ही हशक्षा की अवधारणा माना जाने लगा है क्योंकि प्रमाणीकृत शिक्षा एवं मानवतावादी शिक्षा में द्वन्द्व सा है। आज उपाधि उन्मुख शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थी को उपाधियों से अंलकृत या विभूषित करना ही शिक्षा का परम उद्देश्य हो गया है। प्रमाणीकरण के कारण प्रमाण-पत्र बाजार में उसके मूल्य सूचक बन जाते हैं, जिसे समाज में उसके प्रत्याशा स्तर को परिभाषित किया जाता है। शिक्षा प्रणली में यह सिखाय जाता है कि अनुदेशन से ही अधिगम उत्पन्न होता है। शिक्षण संस्थाएँ इस बात को सफलतापूर्वक प्रमाणित करती हैं कि सभी मूल्यवान अधिगम उसी परिवेश में घ्टित होते हैं। इसीलिए वह पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों में मानकीकरण लाती हैं, जबकि प्रमाणीकृत शिक्षा लक्ष्य एक मिथ्या है। पाओलो फ्रेरे का मानना है कि संस्था से बाहर भी शिक्षा जैसी कोई प्रक्रिया हो सकती है।

भारतीय संदर्भ में विद्यालयों की संख्यात्मक प्रवृति को ही शैक्षिक अवधारणा मानने की भूल की जा रही है। सही अर्थों में प्रचलित आधुनिक शिक्षा को शिक्षा नहीं कहा जा सकता आधुनिक शिक्षा को शिक्षा नहीं कहा जा सकता क्योंकि विभेदीकरण के अभाव में बुद्धि का महत्व नहीं है। वह ज्ञान किस का यदि उसको कौशल में बदलने की क्षमता न हो। शिक्षा मात्र शब्दों का ज्ञान नहीं हैं। यह मानसिक क्षितिज को विस्तृत करता है। चरित्र अधिक महत्वपूर्ण है जो आध्यात्मिकता द्वारा विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा की अवधारण का आधार विस्तृत मानवतावादी लक्ष्य होना चाहिए, जिसका मूल उद्देश्य मानवतापूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञान केंद्रित न होकर धन केंद्रित है। पाओलों फ्रेरे की यह अवधारणा प्रासंगिक लगती है कि आद्यौगिक समाज संकीर्ण शैक्षिक लक्ष्यों के तरफ मोड देता है। प्रमाणीकरण को पाओलो फ्रेरे एक निषेधात्मक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। भारतीय संदर्भ में आजकल प्रमाणीकरण को गुणवता के साथ जोडकर देखा जा रहा है और ऐसा प्रतीत होने लगा है कि प्रमाणीकृत शिक्षा की दुर्बलताएँ पश्चिम के विकासशील राष्ट्रों में स्पष्ट कुप्रभाव छोड रहीं है परन्तु भारतीय संदर्भ में प्रमाणीकरण के प्रति आकर्षण है।

### शिक्षा प्रणाली में अभिभावकत्व बोध की कमी

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अभिभावकत्व बोध की कमी है क्योंकि यह सूचनात्मक ज्ञान के आदान-प्रदान तक ही सीमित है। यहाँ सूचनात्मक ज्ञान एक उपहार होता है जो स्वयं को ज्ञानवान समझने वालों (शिक्षक) के द्वारा उनको दिया जाता है, जिन्हें वे नितान्त अज्ञानी समझते हैं। इस शिक्षा के द्वारा छात्रों की सृजनात्मक शक्ति न्यून हो जाती हे या समाप्त हो जाती है और तुरन्त विश्वास कर लेने की प्रवृति को बढाती है। प्रचलित भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक के कर्म की दो अवस्थाएँ घटित होती हैं। अतः ज्ञान और संस्कृति को सुरक्षित रखने के नाम पर एक ऐसी व्यवस्था रहती है जिसमें न तो सच्चा ज्ञान उपलब्ध होता है, न सच्ची संस्कृति। इस प्रकार प्रचलित शिक्षा प्रणाली में सिर्फ छात्रों के संज्ञानात्मक पक्ष पर ही बल दिया जाता है, भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष पूर्णतःउपेक्षित हो जाते हैं जिससे शिक्षा का संबंध सिर्फ स्मृति स्तर तक ही रह जाता है। अवबोध एवं परावर्तन स्तर पृष्ठभूमि में होते हैं, जिससे शिक्षकों एवं शिक्षा प्रणाली में अभिभावकत्व बोध की कमी होती है। फ्रेरे शिक्षक को अभिभावक के रूप में स्थापित करते हैं जो विवेकीकरण मे माध्यम से व्यक्ति का मानुषीकरण करता है

### सृजनात्मकता का ह्रास

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली परीक्षा केंद्रित, सूचना उन्मूख, प्रमाणीकरण, पुस्तकीय एवं सैद्धांतिक होने के कारण अप्रसांगिक सिद्ध हो रहीं है। इसमें सिर्फ रटने पर बल देने के कारण इसमें सृजनात्मकता का अभाव है। छात्रों में मौलिकता, नवीनता, प्रवाहशीलता, नमनीयता, रचनात्मकता, आदि मनोवैज्ञानिक गुणों का पूर्णतः विलोप हो रहा है। आज बच्चों को परिवार में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा अर्थात् बच्चों में व्यवहार प्रतिमान संस्कार, मूल्य एवं आदतो का निमार्ण जैसे सामाजिक उतरदायित्वों को भी शिक्षण संस्थाओं पर डाल दिया गया है जबकि शिक्षण संस्थाओं की स्थिति यह है कि वहाँ बोझयुक्त पाठ्यक्रम के सामनने प्ले वे लर्निंग एवं ज्वायफुल लर्निंग, शिक्षक के स्वस्थ व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, कक्षा का प्रत्यक्ष संवाद, छात्रों की वास्तविक समस्याओं से परिचित होकर उनके निदान के तंत्र का विकास जैसे शिक्षण बिन्दु

पृष्ठभूमि में चले गए हैं, जिससे सृजनात्मकता का क्रमशः ह्रास होता जा रहा है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से प्रस्तुत एबिलिटी लर्निंग टेस्ट के नतीजे बताते हैं कि कक्षा-5 तक के औसतन 45 प्रतिशत बच्चों को गणित में औसत ज्ञान भी नहीं है। इसके अतिरिक्त भाषा, विज्ञान व सामाजिक विज्ञान में भी पढने-लिखने की स्थिति काफी बदतर है

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य एवं उसका क्रियात्मक पहलू कोर्स रटाने, परीक्षा सम्पन्न कराने और परीक्षा परिणाम तक ही सीमित होकर रह गया है। इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का स्थान मात्र वेतनभोगी व्यक्ति तथा शिक्षार्थी की स्थिति तोता रटंत जैसे संवेदना शून्य छात्र की बनकर रह गयी है। परीक्षा का परिणाम बच्चों को आत्मघाती बना रहा है। यथार्थ यह है कि शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम के सामने विद्यार्थी का रचनात्मक व्यक्तित्व कहीं खो गया है। नौकरी और डिग्री के बीच का सहसंबंध भी इस शिक्षा व्यवस्था को पाठ्यक्रमोन्मुख बनाने को मजबूर कर रहा है। इस पाठ्यक्रम में भले ही सैद्धांतिक कौशल है परन्तु छात्र की कियात्मक शक्ति लुप्त होती जा रही है। पाओलों फ्रेरे द्वारा प्रस्तावित समस्या उठाउ शिक्षा का मूल उद्देश्य ही अर्थपूर्ण संवाद वं सृजनात्मकता विकसित करना हैं। इस प्रकार फ्रेरे का चिंतन एवं समस्या उठाउ शिक्षा द्वारा छात्रों में निश्चिय रूप से सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है।

### शिक्षा प्रणाली में अमनौवैज्ञानिकता

वर्तमान युग सूचना एवं संचार तकनीक का है। इसमें ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। ज्ञान को सूचना का पर्याय माना जा रहा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में अधोलिखित अ-मनोवैज्ञानिक प्रवृतियाँ विद्यमान हैं-

- शिक्षा प्रणाली का सिर्फ संज्ञानात्मक पक्ष तक ही सीमित होना अर्थात् भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष की पूर्णतः उपेक्षा की जा रही है।
- ज्ञान को सूचना का पर्याय मानने का कार शिक्षक व छात्र सिर्फ स्मृति स्तर के शिक्षण व चिंतन तक सीमित हो गए हैं, अर्थात् अवबोध व परावर्तित स्तर पृष्ठभूमि में चले गए हैं।
- शिक्षा प्रणाली केवल बुद्धिलब्धि तक ही सीमित हो गयी है। यह संवेगात्मक बुद्धि लब्धि एवं आध्यात्मिक बुद्धिलब्धि को उपेक्षित कर दे रही है।
- छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक यांत्रिक हो गयी है।
- बाल मनोविज्ञान एवं बाल केंद्रित शिक्षा सिर्फ सैद्धांतिक अवधारणा बनकर रह गई है।
- इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के कारण शिक्षा प्रणाली अ-मनोवैज्ञानिक हो गयी है।

### शिक्षा प्रणाली का पुस्तक, पाठ्यक्रम एवं अध्यापक केंद्रित होना

भारत में प्रचलित शिक्षा सैद्धांतिक वं सूचनात्मक होने के कारण पुस्तक केंद्रित, पाठ्यक्रम केंद्रित एवं शिक्षक केंद्रित होती जा रही है जिसके दुष्परिणाम सामने आ रहे है। इस के द्वारा प्रतिभाओं की उपेक्षा, अवांक्षनीयता को निर्बाध रूप से सामाजिक मान्यता, श्रम शक्ति की उपेक्षा, उपभोग ही जीवन का अन्तिम अभिप्राय, श्रेष्ठ परम्पररगत मूल्यों के प्रति उदासीनता, शिक्षा को मात्र रोजगार एवं साक्षरता तक सीमित करके सामर्थ्य को न्यून करना, गुणवत्तायुक्त शिक्षण एवं प्रशिक्षण का अभाव, ज्ञानात्मक रूप से पाठ्यक्रमों का अप्रासंगिक होना, सूचनात्मक क्षमता को ही श्रेष्ठ शिक्षा का पर्याय मानना, और जनसंचार माध्यमों को अ-शैक्षिक कार्यक्रमों में लगाना आदि हो रहा है।

अतः उपरोक्त दुष्प्रभावों को समूल दूर करने के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अभाव पर कुशलता एवं कौशल का समावेश होना चाहिए।

### शिक्षा में बढते शैक्षिक बोझ की प्रवृति

किसी भी राष्ट्र या समाज में परिलक्षित होने वाली उन्नति उस राष्ट्र या समाज की शिक्षा का प्रतिफल होती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है और मनुष्य के द्वारा सभ्यता और संस्कृति का विकास किया जाता है। इसीलिए शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला माना जाता है। लेकिन शिक्षा व्यवस्था के उपाधि एवं मूल्यांकन केंद्रित होने के कारण बालकों पर शैक्षिक बोझ बढता चला जा रहा है एवं बालक कुंठा का शिकार हो रहे हैं। भारतीय संदर्भ में प्रो0 यशपाल की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी, जिसने 1993 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक था- 'लर्निग विदाउट बर्डेन' अर्थात् शिक्षा बिना बोझ के। प्रो0 यशपाल ने महत्वपूर्ण सुझाव दिया कि बच्चों को बोझ (शैक्षिक) से पूर्णतया मुक्त किया जाए, उन्हें पुस्तकीय ज्ञान न देकर व्यावहारिक व कौशलात्मक ज्ञान दिया जाए। उन्होंने सुझाव दिया कि विद्यालयों में व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा



Dr. S. K. Mahto*

को बढाने वाले कार्यक्रम आयोजित न किये जाए, शिक्षण-प्रशिक्षण को पत्राचार द्वारा न दिया जाएँ, छात्रों से रटने वाले प्रश्न न पूछकर अवधारणात्मक प्रश्न पूछे जाएँ व बालकों के पाठ्यक्रम मे सृजनात्मक कौशल से संबंधित अंशो का समावेश किया जाए। लेकिन सरकार ने रिपोर्ट पर अमल न कर पुनः उसकी सभाव्यता के परीक्षण के लिए चतुर्वेदी समिति का गठन कर दिया।

शैक्षिक बोझ के कारण ही आज भी बालकेंद्रित शिक्षा प्रणाली एक सैद्धांतिक अवधारणा बनकर रह गयी है, जिससके कारण छात्रों में तर्क, विश्लेषण, सृजनशीलता आदि गुणों का अभाव है। बालकों में समस्या समाधान व आलोचनात्मक चिंतन का विकास नहीं हो पा रहा है। जबकि पाओलो फ्रेरे की पेडागाजी में शिक्षार्थी को केन्द्र में रखकर शिक्षा योजना प्रस्तावित की गयी है एवं इसके समानधान स्वंतंत्रवादी शिक्षा में मिलते हैं। इस प्रकार फ्रेरे विवेकीरण एवं आलोचनात्मक चेतना की अवधारणा को महत्व देते है।

## शिक्षण संस्था में अति कृत्रिमता

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षण संस्थाओं का वातावरण नीरस, अव्यावहारिक एवं अति कृत्रिम होता है। जो बालकों के लिए नीरस एवं उबाउ होता है। यहाँ का वातावरण भययुक्त होता है- यथा शिक्षक का डर, घंटी का डर, प्रवेश का डर, परीक्षा का डर, मूल्यॉकर कर डर, पाठ्यक्रम का डर, अनुदेशन के माध्यम का डर। इसके परिणामस्वरूप छात्रों की सृजनात्मक क्षमता जिज्ञासा का कल्पनाशीलता का विकास नहीं होता। विद्यालयीकरण के प्रभाव के अंतर्गत आने वालों में औपचारिक शिक्षा व्यवस्था द्वारा दिये जाने वाले प्रमाण-पत्रों, डिप्लोमा एवं उपाधियों को ही ज्ञान प्राप्ति का निर्णायक लक्ष्य मान लेने की प्रवृति होती है। इस धारणा का शिकार होकर विद्यार्थी भी शिक्षा का अर्थ प्रमाण-पत्र या उपाधियाँ अर्जित करना समझने लगते हैं और जिसके पास जितनी अधिक उपाधियाँ हैं, उन्हें वे उतना ही अधिक ज्ञानी सिद्ध या विशेषज्ञ मान बैठते हैं।

## संस्थागत शिक्षा को ही शिक्षा का पर्याय मानना

प्रचलित भारतीय शिक्षा में संस्थागत शिक्षा को ही शिक्षा का पर्याय माना जाता है क्योंकि यह धारणा प्रचलित हो गयी है कि बालकों को विद्यालय के माध्यम सक ही सिखाया जा सकता है। परीक्षा, मूल्यांकन एवं प्रमाणीकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता संस्थागत शिक्षा में अधिक है। संस्थागत शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने का प्रयास तो किया किन्तु प्रयास असफल सिद्ध हुआ। संस्थागत शिक्षा भी भारतीय संदर्भ में विभेद कर रही है। एक तरफ गरीब, शोषित, पिछडों एवं सामान्य जन के लिए सरकारी शिक्षा है तो दूसरी तरफ, अभिजात वर्ग के लिए महँगी निजी शिक्षा है। संस्थागत शिक्षा में समग्र मनुष्य की अवधारणा से संबंधित संकीर्णता से है। शिक्षा का संदर्भ मनुष्य के व्यक्तित्व की समग्रता है। जिंदगी जीने की बुनियादी जरूरतों के मामले में प्रत्येक स्त्री-पुरूष समान है और यही मानवता की एकता हैं। इस उद्देश्य की तरफ ऐसा स्कूल बढ ही नहीं सकता जो अपनी प्रवेश नीति के माध्यम से सामाजिक स्तर योग्यता या व्यवहार की एक रूपता स्थापित करना चाहता हो। पढाई भले वहाँ कितनी कठोर हो परन्तु ऐसी शिक्षा बच्चे के मन में निहित सार्थकता की प्यास नहीं बुझा सकती। फोबेल के बाद से शिक्षण में प्रगतिशील एक मुख्य बात रहीं है कि बच्चों को बच्चों की तरह रखिए अर्थात् स्वतंत्रतापूर्वक जीने दिया जाए।

इस प्रकार सिर्फ संस्थागत शिक्षा द्वारा गुणवतापूर्ण शिक्षा सभी को नहीं प्रदान की जा सकती। वैकल्पिक साधन भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं-यथा दूरवर्ती शिक्षा, मुक्त शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा आदि। उनका भी मानना था कि प्रचलित शिक्षा उत्पीडितों को पूर्णतः मानुषीकरण नहीं कर सकती। इस विमर्श के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्थागत शिक्षा, शिक्षा का पर्याय नहीं हो सकती।

## स्वतः प्रयास से सीखने में कमी

भारतीय शिक्षा प्रणाली में बालकों में स्वतः प्रयास से सीखने में कमी होती जा रही हैं। क्योंकि बालको नित्य नई उपलब्धि की ओर अग्रसर करने वाले ये स्कूल समय को एक यांत्रिक दृष्टि से देखते हैं। सिर्फ अध्यापक को खुश रखने और माँ-पिता की निगाह में गर्व का पात्र बनने की लालसा बची रहती है। अभिजात स्कूलों में पढने वाले अधिकांश छात्र प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करते बौद्धिक रूप से राख हो चुके होते हैं। स्वतः प्रयास से सीखने में कमी के लिए अध्यापकों की भी जबाबदेही बनती है। विद्यार्थी क्या सीख रहे हैं, कितना सीख पा रहे हैं और क्या कुछ नया पा रहे हैं। अधिकांश विद्यालयों में यह देखने के लिए मिलता है कि शिक्षक सूचनाओं के हस्तांतरण मात्र का ही कार्य करते हैं जो सूचना और संचार तकनीक युग में और माध्यमों द्वारा कही अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जाना सम्भव है। इस प्रकार शिक्षक और विद्यार्थी के संबध पर आधारित बैंकिग शिक्षा पद्वति से समस्या उठाउ पद्वति के तरफ प्रतिमान परिवर्तन करके बच्चों में विश्लेषण, आलोचनात्मक चेतना, स्वतः प्रयास में सीखना एवं सृजनात्मकता आदि मानसिक शक्तियों को छात्रों मे विकसित किया जा सकता है।

## गुणात्मक शिक्षा का संकट

भारत में प्रचलित शिक्षा (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा) में विस्तार सिर्फ संख्यात्मक आधार पर हो रहा है, गुणवता का क्रमशः विलोप होता जा रहा है। एक समय भारतीय शिक्षा पद्धति वैश्विक अध्ययन के केंन्द्र हुआ करते थे, लेकिन वर्तमान संदर्भ में गुणात्मक शिक्षा एक मिथक बनकर रह गयी है। प्राथमिक शिक्षा में आज भी सार्वभौमिक अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के संवैधानिक प्रतिबद्धता के बावजूद हम सभी के लिए गुणात्मक शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं, सकल नामाॅकन दर में तो वृद्धि हुई है, लेकिन विद्यालय त्याग काफी ऊँची है, दूसरी तरफ माध्यमिक शिक्षा सिर्फ एक कडी का कार्य करने तक सीमित रह गयी है। उच्च शिक्षा की स्थिति तो और भी दयनीय है। भारत का एक भी उच्च शिक्षण संस्थान या विश्वविद्यालय विश्व के टॉप 100 में गुणवता की दृष्टि से स्थान नहीं पा सके हैं।

उच्च शिक्षा की गुणवता बनाए रखना अहम चुनौती है। इसके लिए प्रतिबद्धता, कार्य संस्कृति, सकारात्मक सोच एवं राजनैतिक दृढ़ इच्छाशक्ति आवश्यक है। कोठारी आयोग (1964-66) ने अपनी अनुप्रशंसा में शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत खर्च करने की सिफारिश की थी, लकिन आज भी हम सिर्फ 3.5-3.8 प्रतिशत तक ही शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं, जबकि विकसित देश बहुत पहले से ही 7 प्रतिशत खर्च कर रहे हैं वहीं अन्य विकसित देश देश 1.5 प्रतिशत जी.डी.पी. का खर्च कर रहे हैं।

## वैश्वीकरण, सूचना एवं संचार तकनीक एवं शैक्षिक संकट

भारतीय शैक्षिक परिदृश्य आज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। भारत को अन्र्तराष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व बैंक से कर्ज लेने के लिए अपनी आर्थिक नीतियों में परिवर्तन करना पडता है। परिणामतः भारतीय शिक्षा भी वैश्वीकरण एवं संचार क्रांति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में अधोलिखित संकट परिलक्षित हो रहे हैं-

- शिक्षा का उद्देश्य चरित्र एवं मानव निर्माण न होकर धनोपार्जन हो गया है।
- शिक्षा एक संस्कार एवं सर्वांगीण विकास न होकर एक वस्तु बनकर रह गयी है।
- मनुष्य को एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्राणीन मानकर एक संसाधन माना जा रहा है।
- ज्ञान का स्थान सूचना ने ले लिया है।
- भारतीय संदर्भ में 'डिजिटल डिवाइड के' रूप में सामाजिक विलगाव तेजी से बढ रहा है।
- पूरी शिक्षा प्रणाली यॉत्रिक रूप से 'इलेक्टॉनिक केंद्रित' हो गयी है।
- इलेक्ट्रानिक युग मे 'मुक्ति' का एजेंडा पृष्ठ भूमि में चला गया है।
- सूचना-संचार तकनीक सिर्फ संज्ञानात्मक पक्ष तक ही सीमित है, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष पूर्णतः उपेक्षित है।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन एवं अन्तःक्रिया का पूर्णतः विलोप हो गया है।

उत्तर औपनिवेशिक समाज दोनों ही धाराओं में बह रहे है- एक धारा भूमंडलीकरण का है तो दूसरी धारा मुक्ति के लिए निरन्तर जारी संघर्ष की। वस्ततुः इन समाजों ने औपनिवेशिक वर्चस्व के विरूद्ध संघर्ष किया है और स्वतंत्रता अर्जित की है। पाओलो फ्रेरे का चिंतन मुक्ति के लिए निरंतन जारी संघर्ष की धारा से संबधित रहा जो उत्पीडितों के पूर्णतः मानुषीकरण पर टिका रहा। इस अवस्था की विशेषता यह होती है कि जनता का वंचित वर्ग अपनी सृजनात्मकता को साकार करने के समक्ष खडी बाधाओं के प्रति नव चेतना से भर उठता है। जब शोषित वंचित, दलित, महिला, आदिवासी, कामगार अपनी सृर्जनात्मक संभावनाओं को साकार करने के लिए अपने अधिकारों की पूर्ति करना चाहता हैं।

## निष्कर्ष

भारतीय संदर्भ में टैगोर, विवेकानंद, अरविंद, गाँधी, गिजुभाई, श्री सत्यसाई बाबा जैसे विचारकों ने जिन भारतीय शिक्षा की समस्याओं को विश्लेषित किया है उसी को यूरोप, अमेरिका, ब्राजील की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक उपक्रमों के क्षेत्रों में पाओलो फ्रेरे ने देखने का प्रयास किया है। फ्रेरे, इवान इलिच की भॉति सम्पूर्ण शैक्षिक ढॉचे को नष्ट करने के हिमायती तो नहीं है लेकिन शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन चाहते हैं। निर्विद्यालयीकरण की भॉति फ्रेरे मानते हैं कि शिक्षण संस्था से बाहर भी शैक्षिक प्रक्रिया संभव है। वह शिक्षा प्रणाली के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक चेतना विकसित कर सामाजिक न्याय केंद्रित शोषणयुक्त पूर्ण मानुषीकरण जैसा परिवर्तन क्रांति के द्वारा लाने पर बल देते है। पाओलो फ्रेरे सर्वाधिक समस्या उठाउ

शिक्षा, पाठ्यक्रम लचीलापन, स्वतः स्फूर्ति द्वारा सीखना, शिक्षक को अभिभावकत्व बोध बनाने, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिकता से समृद्ध करने, बालक को वस्तु की जगह मानव इकाई मानने, सीखने को कृत्रिमता के भ्रम से यथार्थ के धरातल पर लाने, अनौपचारिक शैक्षिक गतिविधियों को शैक्षिक रूप से अधिक प्रभावी बनाने, शिक्षा के माध्यम से सामाजिक रूपान्तरण करने आदि के प्रयासों में लगते हैं।

## सन्दर्भ

एँजिला सिस्की - पाओलो राज्य में विद्यालय प्रशासन का विस्तार,एक एथेनोग्राफिक अध्ययन

मारिया वेली - प्रौढ साक्षरता में प्रारम्भिक पठन व लेखन पर सामाजिक - निर्माणवादी दृष्टिपात

के.जी.सैय्दन - भारत में प्रौढ़ शक्षा विशेशांक, साहित्य परिचय, आगरा,1978

कान्ता मारवा - प्रौढ़ शिक्षा उद्देश्य और शिक्षा पद्धति, प्रौढ शिक्षा विशेशांक साहित्य परिचय,आगरा 1978

गुप्ता विशेष - शिक्षा व्यवस्था का आईना, दैनिक जागरण-16 फरवरी 2008

मोहन्ती, एम - समाज विज्ञान, भूमण्डलीय और सर्जनशील समाज की चुनौतियाँ, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली 2001।

गौड, आर.एस. - महात्मा गाँधी का शिक्षा परिप्रेक्ष्य न्यूपा, अप्रैल-अगस्त 2001 वर्ष 8 अंक 1-2।

कुमार कृष्ण - दोहरी शिक्षा व्यवस्था का अभिशाप, पग्प्रिेक्ष्य, न्यूपा, वर्ष-3, अंक-1 2005।

---

**Corresponding Author**

**Dr. S. K. Mahto***

Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan